IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धी विचार

(Mahatma Gandhi's Views on education)

लेखक– डॉ0 राघवेन्द्र दीक्षित

महाराणा प्रताप शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,बसेड़ी, धौलपुर (राजस्थान)

"मुख्य कठिनाई यह है कि लोगों को यह पता ही नहीं है कि सच्चे अर्थों में शिक्षा क्या है? हम ठीक उसी तरह से शिक्षा का मूल्य निर्धारित करते हैं. जिस प्रकार हम भूमि का मूल्य या शेयर बाजार में शेयरों का मूल्य निर्धारित करते हैं। हम केवल ऐसी शिक्षा देना चाहते हैं जो विद्यार्थियों को अधिक से अधिक धन कमाने में सक्षम बनाये हम कभी भी शिक्षा प्राप्त करने वाले के चरित्र में सुधार लाने के बारे में सोचते ही नहीं।"

– महात्मा गाँधी

शिक्षा, समाज, राष्ट्र और विश्व की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। शिक्षा का सबसे बड़ा कार्य एक ऐसे समग्र व्यक्तित्व का विकास है, जो जीवन की समग्रता को पहचान सके, इसलिए शिक्षा सभी मनुष्यों का सबसे पहला और सबसे आवश्यक अधिकार है, शिक्षा के बिना मनुष्य अधूरा है और मानव जीवन बेकार है। शिक्षा हमें अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, यह हमारे ज्ञान, कुशलता, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व कों सुधार लाकर यह सामाजिक विकास, आर्थिक वृद्धि और तकनीकी उन्नति का रास्ता तैयार करती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदर्शवादी रहा है। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं पर उनका मानना था कि सामाजिक उन्नति के लिए शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है, अतः गाँधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था "शोषण विहीन समाज की स्थापना करना"। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वच्छ समाज का निर्माण असम्भव है, अतः गाँधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं रिद्धान्तों की व्याख्या की तथा प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। उनका शिक्षादर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति अद्वितीय योगदान रहा है उनका मानना था मेरे भारत के प्रिय बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात् Head, Hand, Heart की शिक्षा दी जावे। शिक्षा उन्हें स्वाबलम्बी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

महात्मा गाँधी एवं शिक्षा व्यवस्थाः– (Mahatma Gandhi and education system)

शिक्षा के सम्बन्ध में गाँधीजी के विचार एकदम स्पष्ट थे शिक्षा के परम्परागत ढॉचे से वे सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि यह शिक्षा बालकों को कार्य कुशलता एवं क्षमता प्रदान नहीं करती। उनके अनुसार एक प्रकार से हम विदेशी भाषाओं के माध्यम से विदेशी सस्कृति का अध्ययन कर रहे हैं जिसका इस धरती के साथ दूर–दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। गाँधीजी नैतिक शिक्षा के पक्षपाती थे। उनकी नैतिकता रूढ़िवादी, पाखण्डयुक्त नैतिकता नहीं थी–उससे भी कहीं अधिक पवित्र तथा मानव–मानव के सहयोग पर गुणों का अधिक महत्व है, परिमाण और मात्रा का नहीं। जो शिक्षा व्यक्ति को उलझन में डालती है और अस्पष्टता प्रदान करती है वह किसी काम की नहीं। शारीरिक श्रम और शिक्षा को उन्होंने अत्यधिक महत्व दिया है।

गॉधीजी के वर्तमान शिक्षा पद्धति से दुःखी रहा करते थे उनका मानना था कि वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। आज के अध्यापक पर विद्यार्थियों को योग्य बनाने का भार जितना होना चाहिए उतना नहीं है। मानवीय चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा में आवश्यक पाठ्यक्रम का विकास होना चाहिए। वे चाहते थे विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर किताबों का बोझ कम हो। स्कूल कालेजों में प्रवेश के लिए राजनैतिक हस्तक्षेप कम हो। विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही राजनीति से अलग हो।

गांधीजी ने शिक्षा में एक उचित पाठ्यक्रम निर्माण की भी बात व्यक्त की गॉधीजी का मानना था कि विद्यमान पाठ्यक्रम छात्रों को उनके आसपास का ज्ञान देने में असमर्थ है, इन पाठ्य पुस्तकों को नष्ट कर देना चाहिए और उनके स्थान पर सहज पाठ्य–पुस्तकों का निर्माण करना चाहिए जो छात्रों को आसपास के जीवन में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित कर सके, साथ ही गॉधीजी के शिक्षण पद्धतियों का मनोवैज्ञानिक आधार पर सृजित करने की कल्पना भी है। शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर वह मानते हैं कि बालकों के अन्दर अनुकरणीय प्रवृत्तियों की प्रबलता होती है।

गॉधीजी के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तः–(Gandhiji's educational principales)

डा0 एम0 एस0 पटेल के अनुसार–'गॉधीजी ने उन महान शिक्षकों एवं उपदेशकों की गौरवपूर्ण मण्डली में अनैखा स्थान प्राप्त किया है जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नवज्योति दी है।"

अपने विविध एवं व्यापक अनुभवों से गॉधी ने निम्नलिखित निष्कर्ष मुख्यतः शिक्षा के सम्बन्ध में निकाले हैं–वह निम्न हैः–

(1) गॉधीजी शिक्षा द्वारा व्यक्ति के मन, शरीर व आत्मा का पूर्ण विकास करना आवश्यक समझते थे ।

(2) गॉधीजी ने उस शिक्षा को उत्तम बताया जो हमें सैधान्तिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान देने की क्षमता प्रदान कर सके।

(3) गॉधीजी यह भी मानते थे कि शिक्षा अक्षर ज्ञान नहीं हैं वरन वह व्यवहार का परिमार्जन करने की एक प्रक्रिया है।

(4) शिक्षा के द्वारा उत्तम नागरिकों का निर्माण होना चाहिए।

(5) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।

(6) गॉधीजी ने इस बात पर भी बल दिया कि सम्पूर्ण भारत में सात से चौदह वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

(7) शिक्षा का सम्बन्ध जीवन की वास्तविक परिस्थतियों से होना चाहिए।

(8) शिक्षा सत्य, अहिंसा के मूल्यों को विकसित करने में सहायक होनी चाहिए ।

(9) शिक्षा के द्वारा बालक में आर्थिक क्षमता तथा उत्पादक क्षमता का विकास किया जाना चाहिए।

(10) शिक्षा द्वारा बालक की क्षमताओं का पूर्ण रूप से विकास किया जाना चाहिए।

(11) शिक्षा ऐसी हो जो नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कर सके।

अतः: गॉधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास करना है। अतः बालक के सर्वांगीण विकास हेतु उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास करना है। महात्मा गॉधी शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों अपने विचार दिये हैं जो निम्नलिखित है।

अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं हैः–(Literacy is not education)

समान्यतः बोलचाल में अक्षर ज्ञान या साक्षरता को शिक्षा का पर्याय माना जाता है लेकिन गाँधीजी का मानना है कि साक्षरता शिक्षा नहीं है। निरक्षर व्यक्ति शिक्षित और साक्षर व्यक्ति अशिक्षित हो सकते हैं–ऐसे बहुत उदाहरण मिलते हैं। कबीर निरक्षर थे। पर कौन माई का लाल उन्हें अशिक्षित कह सकता है इसी तरह अनेक साक्षर, जिनकी बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिनके आचरण को देखते हुए उन्हें शिक्षित कहने में संकोच होता है। गाँधीजी ने स्पष्ट कहा है–"मैंने साक्षरता को कभी भी मिथ्या महत्व देने की चेष्टा नहीं की है। .... स्वयं साक्षरता नैतिक उत्थान में लेशमात्र भी सहायक नहीं होती और चरित्र निर्माण साक्षरता से सर्वथा स्वतन्त्र है।"

बुनियादी शिक्षा योजनाः–(Basic Education Scheme)

अविनाश लिंगम के शब्दों में–"बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रपिता का अन्तिम और सम्भवतः महानतम उपहार है"।

गाँधीजी ने अक्टूबर 1937 में वर्धा में हो रहे "अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन" में शिक्षाविदों के समक्ष बुनियादी शिक्षायोजना को प्रस्तुत किया। इसे "वर्धा शिक्षा सम्मेलन" के नाम से भी जाना जाता है। जो कि मैट्रिक स्तर पर अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी। जामिया मिलिया के तात्कालीन प्रिंसिपल डा0 जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में "जाकिर हुसैन समिति" का निर्माण किया गया तथा गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों एवं प्रस्तावों के आधार पर **"नई तालीम"** (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई तथा 1938 में हरिपुर के अधिवेशन में इन रिपोर्ट को स्वीकृति दी जोकि "वर्धा शिक्षा योजना" के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँः– (Features of basic Education)

गॉधीजी के बुनियादी शिक्षा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–––

(1) 7 से 14 वर्ष तक के बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाय ।

(2) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। हिन्दी भाषा का अध्ययन बालक एवं बालिकाओं के लिए आवश्यक है ।

(3) सम्पूर्ण शिक्षा का सम्बन्ध आधारभूत हस्तकौशल से होता है। अतः शिक्षा का मुख्य केन्द्र हस्तकौशल को बनाना चाहिए जिससे सभी शिक्षित व्यक्तियों के अन्दर उत्पादक कौशल को उत्पन्न करके व. विकसित किया जा सके।

(4) हस्तकौशल की शिक्षा इस प्रकार दी जाय कि बालक उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सके।

(5) बुनियादी शिक्षा स्वावलम्बन के सिद्धान्त पर आधारित है इस शिक्षा के द्वारा छात्रों से विभिन्न प्रकार का सामान बनवाया जाता है जिसे बेचकर यह धनोपार्जन करते हैं और विद्यालय की आय में वृद्धि होती है।

(6) शिक्षा बालकों के जीवन, घर ग्राम, तथा ग्रागीण उद्योगों, हस्तशिल्पों है और व्यवसाय से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है।

(7) बालक एवं बालिकाओं के लिए समान पाठ्यक्रम रखा जाय।

(8) पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष हो।

(9) पाठ्यक्रम में अंग्रेजी व धर्म की शिक्षा न दी जाय।

(10) गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा के द्वारा ऐसे आदर्श नागरिकों का निर्माण किया जाय जिनमें व्यक्तिगत गरिमा एवं दक्षता हो, जो सबके साथ मिल जुलकर काम कर सके।

गॉधीजी की बुनियादी शिक्षा के पाठयक्रम के अन्तर्गत आधारभूत शिल्प जैसे–कृषि, कताई, बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का काम पुस्तककला, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, बालिकाओं हेतु गृहविज्ञान तथा स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा प्रद हस्तशिल्प इसके अलावा मातृ भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, कला, हिन्दी, शारीरिक शिक्षा आदि को रखा जाना चाहिये। शिक्षण विधि को शिक्षण का वास्तविक कार्य–क्रियाओं और अनुभवों पर अनिवार्य रूप से आधारित किया।

गॉधीजी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त व्याख्यों का मूल्यांकन किया जाय तो इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि गाँधीजी का शिक्षा दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है।

शिक्षा का माध्यम (Medium of Education):––

गाँधीजी की नीति स्पष्ट थी कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही बनाया जाना चाहिए। लिपि के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की थी–"यदि मेरी चले तो मैं देवनगरी और उर्दू लिपि का सीखना अनिवार्य कर दूँ" वह रोमन लिपि के पक्ष में कतई नहीं थे। उनका मानना था कि प्रत्येक सुसंस्कृत भारतीय को अपनी प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त यदि वह हिन्दु है तो संस्कृत जानना चाहिए, यदि मुसलमान है तो अरबी, यदि पारसी है तो फारसी जाननी चाहिए परन्तु इन सभी को हिन्दी का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए चूँकि यह भारतीय या हिन्दुस्तानी है। गाँधीजी उच्च शिक्षा में प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था चाहते थे।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचारः– (Thoughts regarding women's Education)

गॉधीजी स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे उनका मानना था कि स्त्री को अपना घर सुचारू रूप से चलाने व संतति के पोषण हेतु उसका शिक्षित होना आवश्यक है। वह मानते थे कि स्त्री न केवल पत्नी, बहन व माता है बल्कि वह ईश्वर की सर्वोत्तम निधि व कृति है। उसे उन विषयों की शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए जिससे वह स्वयं के, अपने परिवार के तथा अपने बच्चों के जीवन को सुखी बना सके। स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम को उन्होंने पुरूष पाठयक्रम से पृथक बताते हुए इस बात पर बल दिया कि स्त्रियों को गृहविज्ञान, साहित्य, संगीत, कला, बालमनोविज्ञान आदि का ज्ञान अनिवार्य रूप से करवाया जाना चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी विचारः– (Adult education ideas)

गाँधीजी वयस्यकों को अक्षर ज्ञान देने की अपेक्षा इस बात पर बल देते थे कि शिक्षा के द्वारा उनकी अज्ञानता को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए शिक्षा का प्रयास यह होना चाहिए कि वह अशिक्षितों के मस्तिष्क में विद्यमान अंधकार व अंधविश्वासों को दूर करे। गाँधीजी का मानना यह भी था कि प्रजातन्त्र की सफलता यदि हम चाहते हैं तो यहाँ के नागरिकों का शिक्षित होना परमावश्यक है चूँकि उसके द्वारा हम जन साधारण की कूप–मण्डूकता का दमन कर सकते हैं। गाँधीजी यह मानते हैं कि–"मेरे विचार से दुःखी होने का तथा शर्म करने का कारण निरक्षरता नहीं बल्कि अज्ञानता है।"

धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में विचारः–(Thoughts regarding religious Education)

गाँधीजी का विचार था कि मेरे लिए धर्म का तात्पर्य सत्य व अहिंसा है। वह धर्म शिक्षा का अर्थ कदापि नहीं बताते थे कि पाठ्यक्रम में हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को निहित किया जाये। उनका विचार था कि धर्म शिक्षा को विभिन्न धर्मों के समन्वय के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे छात्रों में श्रद्धा, सहिष्णुता, प्रेम, त्याग, सहानुभूति, अपनत्व व नैतिक मूल्यों को समाहित किया जा सके। गाँधीजी का मानना है कि धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। और इसके द्वारा छात्रों में आत्मबोध का भाव उत्तन्न किया जाना चाहिए। धार्मिक शिक्षा उन अध्यापकों द्वारा विशेषतौर पर दी जानी चाहिए जिनका स्वयं का चरित्र उच्च कोटि का हो।

राष्ट्रीय शिक्षा के सम्बन्ध में विचारः–(Thoughts regarding national Education)

गॉधीजी ब्रिटिश शासन काल की शिक्षा व्यवस्था से बहुत क्षुब्द थे। गाँधीजी का मानना था कि यदि हम शिक्षा द्वारा वांछित परिणामों की कल्पना करते हैं तो हमें शिक्षा को भारतीयता पर आधारित करना होगा। शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बौद्धिक विकास करना ही नहीं हैं वरन् उसके द्वारा उन भावनाओं एवं संवेगों का विकास करना है। जो भारतीय जनमानस के हृदय को उद्वेलित कर सके व उनमें अपनत्व के बीज बो सके। यदि हम शिक्षा को सफल बनाना चाहते हैं तो हमें शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा को बनाना होगा और साथ ही ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी जो भारतीय गाँव के उद्योगों व व्यवसायों के अनुकूल हो इसी आधार पर उन्होंने 1921 में राष्ट्रीय शिक्षा की घोषणा की।

शिक्षा के उद्देश्यः– (Objectives of Education)

गाँधीजी के शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है–

(1) शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य

(2) सर्वोच्च उद्देश्य तात्कालिक उद्देश्य जिनको नियमित शिक्षा के माध्यम से शीघ्र प्राप्त किया जा सके, जो कि इस प्रकार हैः–

(i) जीविकोपार्जन का उद्देश्य–गॉधीजी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, बालक आत्मनिर्भर बन सके, तथा बेरोजगारी मुक्त हो।

(ii) सांस्कृतिक उद्देश्य–गाँधीजी ने संस्कृति को शिक्षा का आधार माना। उनके अनुसार मानव व्यवहार में संस्कृति परिलक्षित होनी चाहिए।

(iii) पूर्ण विकास का उद्देश्य–उन्तके अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जिसके बालक का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास हो सके।

(iv) नैतिक या चारित्रिक विकास–गाँधीजी ने चारित्रिक एवं नैतिक विकास को शिक्षा का उचित आधार माना है।

(v) मुक्ति का उद्देश्य–गाँधीजी का आदर्श "सा विद्या या विमुक्तयें' हे अर्थात् शिक्षा ही हमें सब बन्धनों से मुक्ति दिलाती है। गॉधीजी, कि शिक्षा के सर्वोच्च उद्देश्य के अन्तर्गत वे सत्य की प्राप्ति पर बल देते थे। अतः मनुष्य का अन्तिम एवं सर्वोच्च उद्देश्य आत्मानुभूति करना है।

मूल्यांकन (Evaluation):–

यदि हम गाँधीजी के शिक्षा दर्शन का मूल्यॉकन करें तो हम यह बात निःसंकोच कह सकते हैं कि युग सृष्टा के रूप में गाँधीजी ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है, वह शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष से कतई सहमत नहीं थे इसी कारण उन्होंने शिक्षा दर्शन के रूप में उन्होंने शिक्षा का गयात्मक रूप प्रस्तुत किया। गाँधीजी के शिक्षा के द्वारा एक सम्पूर्ण मानव के विकास की कल्पना करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने महत्वपूर्ण बल इस बात पर भी दिया कि शिक्षा देश की विद्यमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए। वह एक प्रेरक शिक्षा की कल्पना करते थे जो सम्पूर्ण भारतीयों को एक सूत्र में बाँध सके इसी कारण उन्होंने हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाये जाने पर बल दिया।

डा0 राधाकृष्णन् ने गाँधीजी के शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है–"अपने जीवन एवं उपदेश द्वारा उन्होंने मूल्यों का यह प्रभाव रखा जिसको यह देश युगों से मानता रहा–ऐसे मूल्य जो केवल राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है वरन् सार्वभौमिक एवं शाश्वत है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) लालारमन बिहारी–शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

(2) पचौरी डा0 गिरीश–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक

(3) पाण्डेय रामशकल–शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि

(4) डा0 सोम्य नैयर–गाँधीजी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

(5) डा0 देवी दत्त पंत और डा0 लक्ष्मण सिंह विष्ट–गाँधी सन्दर्भ

(6) डा0 सरोज सक्सैना–शिक्षा के सिद्धान्त

(7) https//wwwgoogle.com.